मानचित्र का वर्गीकरण -

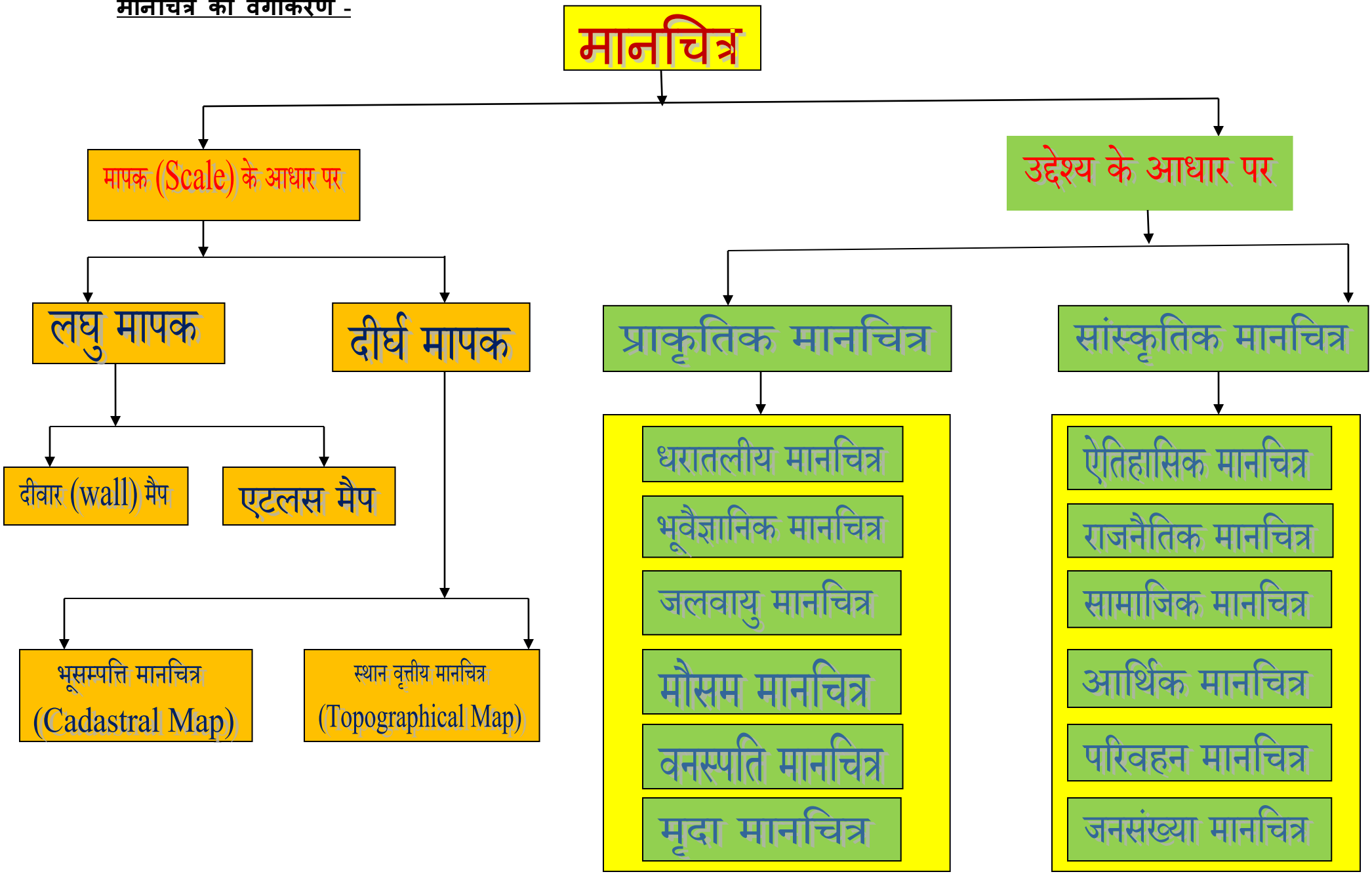

1- <u>मापक के आधार पर</u> - मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं -

A- <u>लघुमापक मानचित्र</u> - इस मानचित्र में धरातल की दूरी छोटे माप में की जाती है अर्थात् इन मानचित्रों में भूमि का विस्तार अथवा क्षेत्र अधिक तथा मानचित्र में विवरण कम प्रदर्शित किया जाता है। जैसे-1 cm = 10 km, 1 cm = 15 km आदि।

लघु मानचित्र में पृथ्वी के बडे- बड़े क्षेत्र प्रदर्शित किए जाते हैं इसलिए इनका उपयोग बड़ी - बड़ी सैनिक योजनाओं को निर्धारित करने में किया जाता है।इन मानचित्रों में छोटी वस्तुओ को प्रदर्शित करना संभव नहीं है।

B- <u>दीर्घमापक मानचित्र</u> - इस मानचित्रों में धरातल की दूरी अपेक्षाकृत बड़े माप में प्रकट की जाती है अर्थात् इस प्रकार के मानचित्रों में भूमि का विस्तार अथवा क्षेत्र कम तथा मानचित्र में विवरण अधिक प्रदर्शित किया जाता है। जैसे - 4 इंच = 1 मील,1 cm = 500 मीटर, 2 cm = 1 km आदि ।

इस प्रकार के मानचित्रों से लाभ यह है कि इनमे भौगोलिक क्षेत्र की छोटी से छोटी वस्तुओ का प्रदर्शन किया जा सकता है।सेना द्वारा युद्ध क्रियाओं में ऐसे ही मानचित्रों का प्रयोग किया जाता है,इन्हे समर्तात्रिक मानचित्र या सैनिक सूचना मानचित्र भी कहते हैं।

a. **<u>भू संपत्ति मानचित्र</u> (Cadastral Map) -**

b. **<u>स्थानवृत्तीय मानचित्र</u> (Topographical Map) -** इस प्रकार के मानचित्रों में भूमि के - प्राकृतिक उभार पहाड़, नदियों आदि के अतिरिक्त मनुष्यों द्वारा बनाई गई आकृतियाँ. सड़क परिवहन, नहर, नगर, मन्दिर आदि भी दिखलाये जाते हैं। स्थानवृत्तीय मानचित्र (Topographical Map) में भूमितल का उभार व गहराई को बारीकी के साथ प्रकट किया जाता है। भारत में स्थानवृत्तीय मानचित्र सर्वे विभाग द्वारा दीर्घ मापक पैमाने पर तैयार किये जाते हैं। सैन्य विज्ञान के क्षेत्र में प्रायः ऐसे ही मानचित्रों का उपयोग किया जाता है।

2- <u>उद्देश्य के आधार पर</u> (According to Purpose)- उद्देश्य के आधार पर बने मानचित्रों को दो भागों में बाँटा गया है

A- प्राकृतिक मानचित्र (Physical Maps)

B- सांस्कृतिक मानचित्र (Cultural Maps)

A- <u>प्राकृतिक मानचित्र</u> - इन मानचित्र के बनाने का आधार प्राकृतिक पर्यावरण के तत्व होते हैं।ये निम्नलिखित प्रकार के होते हैं-

a. **<u>धरातलीय मानचित्र</u> (Relief Map)-** इसमें धरातलीय उच्चावचन जैसे-पर्वत, पठार, मैदान, ज्ञात समुद्र तल आदि को प्रदर्शित किया जाता है।

b. **<u>भू-वैज्ञानिक मानचित्र</u> (Geological Maps)–** इस प्रकार के मानचित्र भू-सतह की शैलों का क्रम एवं उसकी संरचना बताते हैं।

c. **<u>जलवायु मानचित्र</u> (Climatic Maps) -** इन मानचित्रों में तापमान, वर्षा, वायुदाब आदि जलवायु के तत्वों का प्रायः अलग-अलग और कभी-कभी मिश्रित चित्रण किया जाता है।

d. **<u>मौसम मानचित्र</u> (Weather Maps)–** इस प्रकार के मानचित्रों को विशेष मौसम की दशा को विशेष संकेत प्रणाली द्वारा चित्रित किया जाता है।

e. **वनस्पतिक मानचित्र (Vegetation Maps) –** ऐसे मानचित्रों में धरातल के विभिन्न वनस्पतिक आवरण को दर्शाया जाता है।

f. **<u>मृदा मानचित्र</u> (Soil Maps)–** देश के अनेक प्रकार के मिट्टियों की परतों पर जलवायु का विशेष प्रभाव पड़ता है। इनके विभिन्न रूपों का अध्ययन करने के लिए मृदा मानचित्र बनाया जाता है।

B- <u>सांस्कृतिक मानचित्र</u> (Cultural Maps) –– ये मानचित्र निम्नलिखित प्रकार के होते हैं-

a. **<u>ऐतिहासिक मानचित्र</u> (Historical Maps) –** इस प्रकार के मानचित्रों में विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों, साम्राज्यों व इतिहास के विशेष प्रसिद्ध स्थलों को दर्शाया जाता है।

b. **<u>राजनैतिक मानचित्र</u> (Political Maps)–** इसमें तहसील, जिला, प्रान्त व प्रदेश आदि के आधार पर सीमा निर्धारित करने वाले मानचित्र होते हैं।

c. **<u>सामाजिक मानचित्र</u> (Socio Maps) –** इसमें मानव समाज के धर्म, भाषा, सामाजिक स्थिति, साक्षरता मानव जातियाँ एवं जनजातियों आदि को प्रदर्शित किया जाता है।

d. **<u>आर्थिक मानचित्र</u> (Economic Maps)-** इसमें खनिज पदार्थ, कृषि के प्रकार, फसलें, उद्योग एवं उनका केन्द्रीयकरण, औद्योगिक केन्द्र आदि का प्रदर्शन होता है।

e. **<u>परिवहन मानचित्र</u> (Transport Maps)–** इस प्रकार के मानचित्रों में यातायात के मार्गों का उल्लेख किया जाता है।

f. **<u>जनसंख्या मानचित्र</u> (Population Maps)-** इसमें जनसंख्या सम्बन्धी विभिन्न तत्वों को दर्शाया जाता है।